हिंदी के जैन कवि और उनका साहित्य – राजस्थान के संदर्भ में

डॉ. आदर्श किशोर
सहायक आचार्य (हिंदी) , राजकीय महाविद्यालय , बाड़मेर

साहित्य की रमणीयता पाकर अध्यात्म सहज ग्राह्य हो जाता है। चिंतन और प्रवचन साहित्य की ललित शैलियों में प्रवाहित होकर अपनी प्रेषणीयता को कई गुणा बढ़ा देते है। यहीं कारण है कि भारत वर्ष के मनीषी, संत–महात्माओं ने जन–जन तक अपना संदेश पहुँचाने के लिये काव्य का सहारा लिया। जैन कवियों ने भी अपने काव्य के सुरम्य प्रसूनों को वाग्देवी के चरणों में समर्पित करके अपने सृजन धर्म की मर्यादा का पालन किया है।

साहित्य की साधना आदिकाल से ही जैन संतों और विचारकों के साधक जीवन का अटूट अंग रही है। जैन अनुशासन की स्थानकवासी परम्परा ने भी अन्य परम्पराओं ने अनेक कवि–रत्नों को जन्म दिया है। स्थानकवासी परम्परा के संत कवि और श्रावक साहित्यकार भक्तिकाल की उस संत परम्परा के अधिक निकट पड़ते है, जिसने साकार ब्रह्म की अपेक्षा निराकार ब्रह्म का, भक्ति की अपेक्षा ज्ञान का और प्रतिमा–पूजार्चना की अपेक्षा मानवीय नैतिकता की प्रतिष्ठा का अधिक समर्थन और प्रतिपादन किया है।

जैन दिवाकर मुनि श्री चौथमल जी राजस्थान के आधुनिक स्थानकवासी जैन कवियों की पंक्ति में महत्वपूर्ण स्थान पर है। इन्होनें जैन धर्म के सिद्धान्तों का प्रचार अपने ओजस्वी व्याख्यानों में किया। धर्म, ईश्वर, कर्म, मन, आत्मा, ज्ञान, प्रार्थना, सद्गुरू, सत्संग, पुनर्जन्म, भक्ति, दान, शील, तप, भाव आदि तत्वों का सुंदर व तात्विक विश्लेषण अपने काव्य में किया। उनकी ये काव्योक्तियाँ द्रष्टव्य हैं –

है माता–पिता तीर्थ उत्तम और तीर्थ ज्येश्ठ जो भ्राता है,
सद्गुरू तीर्थ है पदे–पदे बस यहीं तीर्थ सुखदाता है।[1]

मुक्तिपथ, गज़ल गुल चमन बहार, जैन सुबोध गुटका उनके काव्य संग्रह हैं। सामाजिक कुरीतियों व कुप्रवत्तियों पर भीषण प्रहार करते हुए वे कहते है –

संतान को जो चाहो भला, रंडी नचाना छोड़ दो,
वृद्ध बाल विवाह बंद करों, करके कुछ दिखलाइयों।[2]

आचार्य श्री हस्तीमल जी जैन संस्कृति, साहित्य और इतिहास के प्रकाण्ड पण्डित, अनुसंधानक, विश्लेषक के साथ–साथ मधुर कवि भी है जिनकी कविता में आत्म जागृति का संदेश है, स्वाध्याय की प्रेरणा है और जीवन सुधार का निर्देश है। गजेन्द्र पद मुक्तावली व जैन आचार्य चरितावली जैसे ग्रन्थ आपकी ही देन है। वे आहवान करते हुए कहते है –

'जग प्रसिद्ध भामा□ाह हो गये लोक चन्द इस बार,
दे□ा धर्म अरू आत्म धर्म के हुए कई आधार।
तुम ही हो उनके ही वं□ाज है कैसे भूले आन ?
कहां गया वह भौर्य तुम्हारा, रक्खो अपनी भान।[3]

आचार्य श्री तुलसी ने 'भरतमुक्ति' व 'आषाढ़मूर्ति' नामक प्रबंध काव्यों की रचना की। 'अणुव्रत गीत' में अनेक शैलियों व रागिनियों में लिखी बहुविध गीतिकाएं संकलित है। भावना और अभिव्यंजना का स्वाभाविक सौन्दर्य गीतिकाओं में दृष्टिगत होता है –

'छोटी सी भी बात डाल देती है बड़ी दरारें।
गलत फहमियों से खिंच जाती आंगन में दीवारें।
इसका हो समुचित समाधान तो मिट जाए व्यवधार रे।
बड़े प्रेम से मिलजुल सीखें मैत्री मंत्र महान रे।'

उपाध्याय श्री अमर मुनि ने अपनी वाणी के जादू और लेखन की चातुरी से कवि कुल में अमिट यश अर्जित किया है। वे एक सहृदय, सरस गीतकार, भावुक मुक्तककार और सिद्वहस्त प्रबन्धकार के रूप में हमारे सामने आते हैं। प्रमुख काव्य कृतियों में अमर पद्य मुक्तावली, संगीतिका, सत्य हरिश्चन्द्र, अमर गीतांजलि, अमर कुसुमांजलि, कविता कुंज, श्रृंद्धाजलि, धर्मवीर सुदर्शन है। अमर मुनि जी मूलतः मानवतावादी कवि हैं। राजत्याग के बाद अपने पति हरिश्चन्द्र के साथ चलने का आग्रह करती हुई तारा का भव्य चरित्र श्रद्धापूर्वक द्रष्टव्य है –

कश्ट आपक संग जो होगा, कश्ट नहीं वह सुख होगा,
और आपके पृथक रहे पर सुख भी मुझको दुख होगा।
बिना आपके स्वर्गलोक को नरकलोक ही जानूंगी,
किन्तु आपके साथ नरक को स्वर्ग बराबर मानूंगी।

सौ बातों की एक बात, चरणों के साथ चलूंगी मैं,

आप नहीं टलते, निज प्रण से कैसे नाथ टलूंगी मैं ?[4]

मरूधर केसरी श्री मिश्रीमल जी पूज्य धन्ना जी परम्परा को गौरवान्वित करने वाले संत है। जितने प्रखर संत है उतने ही प्रखर कवि भी है। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं – यशवन्त चरित्र, बुध विलास, मधुर शिक्षा, मधुर स्तवन बत्तीसी, कविता कुंज, भक्ति के पुष्प, संकल्प विजय, मधुर शिक्षा आदि। अनुप्रास मरूधर केसरी का प्रिय अंलकार है। इसकी एक छटा द्रष्टव्य है –

'भव जल तरणी करणी वरणी भ्रांत रस झरनी है।

वेतरणी हरणी अग झरनी गुरू भक्ति चित्त भरनी है।[5]

श्री गणेश मुनि शास्त्री जैन जगत में एक गूढ़ चिन्तक, मधुर व्याख्यानी और सहृदय कवि के रूप में विख्यात है। उनका संत रूप जितना दिव्य है, कवि रूप भी उतना ही भव्य है। उनकी मान्यता है कि सन्त हुए बिना कोई कवि नहीं हो सकता। सत्साहित्य का सृजन सन्त कवि ही कर सकते है। अभद्र साहित्य का निर्माण करने वाले सन्त हो ही नहीं सकते।[6] उनकी प्रमुख रचनाएं है – वाणी–वीणा, संगीत–रश्मि, गीत–झंकार, गीतों का मधुवन, सुबह के भूले, गणेश गीतांजलि, विश्व ज्योति महावीर आदि। जीवन व जगत की निस्सारता के बारे में वे कहते हैं –

'पल–पल में यहाँ मधुर–मिलन, पल–पल में यहाँ बिछुड़ना है।

जगह आँख मिचौनी की क्रीडा, खिलना और सिकुड़ना है।[7]

इनक काव्य में प्रकृति की रमणीयता के भी दर्शन कई जगह होते हैं।

मुनि श्री नथमल जी दिग्गज विद्वान व महान अध्यात्म साधक है। जीवन की अति गंभीर क्षणों में मर्मानुभूतियों को काव्य के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। फूल और अंगारे तथा 'गूंजते स्वर बहरे कान' इनकी काव्य कृतियाँ हैं। वे जीवन की नई मूल्य भीमांसा प्रस्तुत करते हुए कहते हैं –

'फूल को चाहिए कि

वह कली को स्थान दे

कली को चाहिए कि

वह फूल को सम्मान दे

पतझड़ को रोका नहीं जा सकता,

कोंपल को टोका नहीं जा सकता।'

मुनि श्री महेन्द्र कुमार 'कमल' का नाम भी जैन कवियों में बड़े आदर व गौरव के साथ लिया जाता है। अपनी काव्य कृतियों विधि के खेल, मन की वीणा, मन के मोती, फूल और अंगारे, प्यासे स्वर, प्रकाश के पथ पर में उन्होनें आध्यात्मिकता, नैतिकता व मानवीयता की अलख जगाने का प्रयास किया है। सामाजिक कुरीतियों व शोषण पर कवि ने कठोर प्रहार किए हैं। कवि ऐसे विज्ञान का कभी समर्थन हीं करता जिसमें धर्म की प्रेरणा के लिए किंचित भी अवकाश न हो –

'धर्म भून्य विज्ञान प्रेम के पुश्प न कभी खिला सकता

विद्युत दे सकता है किन्तु मैत्री के दीप न कभी जला सकता।[8]

श्री केवल मुनि, श्री चौथमल जी की शिष्य परम्परा के कवि रत्न हैं। इनकी माधुर्यपूर्ण वाणी समाज के लोगों पर जादूसा असर डालती रहती है। इनकी रचनाएँ गेय होने के कारण अधिक लोकप्रिय व ग्राह्य सिद्ध हुई हैं। मधुर गीत, मेरे गीत, सुन्दर गीत, गीत लहरियाँ, गीत गुंजार, महकते फूल, मेरी बगिया के फूल, गीत सौरभ आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ है। कविताओं की भाषा सरल है। जैन धर्म के सिद्धांतों के प्रचार के साथ–साथ इनकी रचनाओं में समाजोद्धार और राष्ट्रोत्थान का स्वर भी मुखरित हुआ है। राष्ट्र की महत्ता स्वीकार करते हुए वे कहते हैं –

'कुटुम्ब व्यक्ति से ऊँचा है और जाति कुटुम्ब से बढ़कर।

प्रान्त जीवन से ऊपर लेकिन राश्ट्र पर सब न्योछावर।[9]

श्री रमेश मुनि एक उदीयमान कवि है। 'बिखरे मोती, निखरे हीरे' उनकी महत्वपूर्ण काव्यकृति हैं, जिसमें उनकी काव्य सृजन प्रतिभा के संकेत मिलते हैं। उन्होंने अत्यन्त सरल भाषा में वैराग्य शतक, सतयुग शतक और कलयुग शतक की रचना की है। इसी प्रकार वीर गुण इक्कीसी, पर्व इक्कीसी और प्रार्थना पच्चीसी उनके आध्यात्मिक भावों से ओत–प्रोत सुन्दर रचनाएँ है।

अशोक मुनि भी चौथमल जी की शिष्य परम्परा के कवि हैं। इनके गीतों में जहाँ आध्यात्मिक प्रकाश की झलक है, वहीं सामाजिक उद्धार के स्वर भी विद्यमान है। नवकार चालीसा, जिन स्तुति और संगीत संचय के रचयिता श्री अशोक मुनि की मानवतावादी पंक्तियाँ द्रष्टव्य है –

'सूरज सबके घर जाता, पानी सबकी प्यास बुझाता,
पवन जगत के प्राण बचाता, धरती तो है सबकी माता।
इस पै कोई अधिकार जताए कैसा है अज्ञान।
मानव–मानव एक समान।[10]

श्री मूल मुनि ने समरादित्य चरित्र, कुवलय माला चरित्र, अजात शत्रु चरित्र, अम्बड चरित्र आदि प्राचीन कथाओं को लेकर लघु चरित्र काव्य लिखे हैं। अपना खेल : अपनी कृति' में अच्छे–बुरे कर्म, पुण्यफल–पापफल की प्रश्नोत्तरी शैली में विवेचना की गई है।

श्रमणेत्तर श्रावक कवियों में श्री नैनमल जैन का नाम आदर के साथ लिया जाता है। इन्होंने पंचवर्णा, पवनांजना, विधुवन और नैन काव्य संग्रह जैसी अभिराम काव्य कृतियों के माध्यम से स्वधर्म व स्वभाषा के माध्यम से सच्ची सेवा अर्पित की है। काव्य में सौन्दर्य वर्णन हो या विरह वर्णन, दोनों ही स्थितियों में कवि ने पारम्परिक शैली का निर्वाह किया है। प्रकृति के सारे उपादान जो संयोग में सुखकर लगते हैं, विरह काल में असीम दुख के कारण बन जाते हैं। विरहिनी अंजना की ऐसी ही दशा का चित्रण करते हुए कवि कहता है –

कोकिल का स्वर कटु लगता था जला रहे थे पुश्प–पला□ा,
मुकुलित आम्र टीसता मन को, विश सा दाहक था मधुमास।
ज्येश्ठ मास की लू सम उसको तपा रही थी भीत बयार,
कर्णपुटों को कटु लगती थी मधुर मधुकरों की गुंजार।[11]

डॉ. नरेन्द्र भानावत मानवतावादी विचारधारा के कवि है। इनकी रचनाओं में आशा, विश्वास, कर्म, पुरूषार्थ, मानवादर्श के तत्वों का जीवित समुच्य मिलता है। 'आदमी मोहर और कुर्सी' तथा माटी कुंकुम इनकी प्रसिद्ध काव्य पुस्तकें हैं। कवि ने करूणा, प्रेम, श्रम, मानवीय गरिमा और धार्मिक रूढ़ियों की निरर्थकता को निरूपित किया है। ये पंक्तियाँ द्रष्टव्य है –

'क्या होगा पाशाणों के पूजन–अर्चन से,

मानव–मूरत जब तक मन में नहीं बसाओं।'[12]

श्री शोभाचन्द्र भारिल्ल का भी कविता के क्षेत्र में प्रशंसनीय योगदान है। अपने ''भावना'' नामक काव्य संग्रह में वे एक सशक्त व प्रभावशाली कवि के रूप में सामने आते है। आस्रव, संवर, निर्जरा, लोक आदि तत्वों का उन्होनें सुंदर ढंग से काव्यात्मक विश्लेषण किया है। उन्होनें कर्म को मदारी और जीवों को बन्दरों का प्रतीक बताकर कर्मवाद की स्थापना को रूपात्मक ढ़ंग से इन पंक्तियों में चित्रित किया है –

'कर्म और कशायों के व□ा होकर प्राणी नाना,

कायों को धारण करता है तजता है जग नाना,

है संसार यही, अनादि से जीव यहीं दुख पाते,

कर्म मदारी जीवन वानरों को हा, ना नचाते।'[13]

इनके अलावा साध्वी समाज भी काव्य रचना में प्रवृत्त रहा है। साध्वी श्री कनक प्रभा जी, श्री मंजुला जी, श्री संघमित्रा जी, श्री सुमन जी प्रसिद्ध कवयित्रियाँ हुई हैं। आचार्य तुलसी ने लिखा है – 'भावना नारी का सहज धर्म है अतः नारी ही वास्तविक कवि हो सकती है।'[14]

उपर्युक्त कवियों के अतिरिक्त श्रवण वर्ग व गृहस्थ वर्ग के अनेक कवि अपनी काव्याराधना से माँ भारती का भण्डार समृद्ध कर रहें है। श्रमण वर्ग के कवियों में सूर्य मुनि, मधुकर मुनि, सौभाग्य मुनि, उमेश मुनि, सुमेर मुनि, मदन मुनि 'पथिक', भगवती मुनि 'निर्मल', मगन मुनि, रजत मुनि, रमेश मुनि, अजीत मुनि, रंग मुनि, अभय मुनि, विनोद मुनि, जिनेन्द्र मुनि, शान्ति मुनि, पारस मुनि, हीरा मुनि तथा गृहस्थ कवियों में डॉ. इन्दरराज बैद, सूरजचन्द्र सत्यप्रेमी, पं. उदयराज, रत्न कुमार जैन, जीतमल चौपड़ा, ताराचंद मेहता, डॉ. महेन्द्र भानावत चम्पालाल चौरड़िया, मदन मोहन जैन, जितेन्द्र धींग आदि के नाम उल्लेखनीय है।[15]

इस प्रकार हम देखते हैं कि राजस्थान की स्थानकवासी जैन परम्परा ने हिन्दी साहित्य के क्षितिज पर ऐसे अनेक नक्षत्रों को प्रस्तुत किया है जिन्होनें अपनी शब्द–साधना के आलोक से धर्म और समाज के अभ्युदय का मार्ग प्रशस्त किया है। इन सभी कवियों का वर्णन व उल्लेख इस पत्र में किया जाना सम्भव नहीं है क्योंकि लेखक के परिचय की अपनी सीमाएँ है। इसे किसी के प्रति अवज्ञा व उपेक्षा का सूचक नहीं माना जाना चाहिए। प्रस्तुत लेख में

विवेचित कवि अपनी विचारधारा के पोषण के साथ–साथ हिन्दी की सेवा में भी निरन्तर रूप से लगे हुए है। आशा है यह गति आगे भी चलती ही नहीं रहेगी अपितु और समृद्ध रूप से दैदीव्यमान रहेगी।

संदर्भ सूची

1. मुनि श्री चौथमलजी, मुक्तिपथ, पृष्ठ सं. 09
2. मुनि श्री चौथमलजी, गजल गुल चमन बहार, पृष्ठ सं. 14
3. श्री हस्तीमल जैन, गजेन्द्र पद मुक्तावली, पृष्ठ सं. 04
4. श्री अमर मुनि जी, सत्य हरिशचन्द्र, पृष्ठ सं. 89
5. मरूधर केसरी, मधुर स्वतन बत्तीसी, पृष्ठ सं. 08
6. डॉ. रामप्रसाद द्विवेदी, श्री गणेश मुनि शास्त्री : साधक और सर्जक, पृष्ठ सं. 111
7. श्री गणेश मुनि, वाणी–वीणा, पृष्ठ सं. 46
8. महेन्द्र कुमार 'कमल', मन के मोती, पृष्ठ सं. 66
9. श्री केवल मुनि, गीत गुंजार, पृष्ठ सं. 212
10. श्री अशोक मुनि, संगीत संचय, पृष्ठ सं. 15
11. श्री नैनमल जैन, पवनांजना, पृष्ठ सं. 57
12. डॉ. नरेन्द्र भानावत, माटी कुंकुम, पृष्ठ सं. 17
13. श्री शोभाचन्द्र भारिल्ल, भावना, पृष्ठ सं. 07
14. सम्पादक महोपाध्याय विनय सागर, राजस्थान का जैन साहित्य, पृष्ठ सं. 313
15. सम्पादक महोपाध्याय विनय सागर, राजस्थान का जैन साहित्य, पृष्ठ सं. 307